हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय

श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

प्रो० गुड्डी बिष्ट
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हे०न०ब०ग० केन्द्रीय वि० वि० श्रीनगर (ग०)

कला, संचार एवं भाषा संकाय

पाठ्यक्रम

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा–विभाग

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 के अनुरूप)

बी॰ए॰ प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर

(सत्र 2025–26 से लागू)

Amit Sharma   Rohit Kumar

29/8/2025

प्रो. गुड़डी बिष्ट पंवार,
संयोजक एवं विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

बी॰ए॰ प्रथम वर्ष (प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर)

सेमेस्टर	क्र.सं.	कोर्स	प्रश्नपत्र / शीर्षक	क्रेडिट
प्रथम सेमेस्टर	1	DSC Subject-I	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	4
	2	DSC Subject-II	____________________	4
	3	M.D-I/I.D-I (Subject-1)	विषय – गढ़वाली लोक साहित्य-(i) (प्रश्नपत्र शीर्षक – गढ़वाली भाषा : ऐतिहासिक परिचय)	4
	4	M.D-I/I.D-I (Subject-2)	____________________	4
	5	SEC/AEC	AMSC (वि॰वि॰ द्वारा तैयार) OR SEC - भाषा शिक्षण कौशल	2
	6	VAC	Life Skills & Personality Development (वि॰वि॰ द्वारा तैयार)	2
			कुल क्रेडिट	20
द्वितीय सेमेस्टर	1	DSC Subject-I	आधुनिक गद्य	4
	2	DSC Subject-II	____________________	4
	3	M.D-II/I.D-II (Subject-1)	विषय – गढ़वाली लोक साहित्य-(ii) (प्रश्नपत्र शीर्षक – गढ़वाली साहित्य का स्वरूप)	4
	4	M.D-II/I.D-II (Subject-2)	____________________	4
	5	SEC/AEC	SEC – प्रयोजनमूलक हिंदी OR Communication Skills - संचार कौशल	2
	6	VAC	Understanding and Connecting with Environment (वि॰वि॰ द्वारा तैयार)	2
			कुल क्रेडिट	20

नोट – हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा–विभाग, M.D/I.D कोर्स के अंतर्गत गढ़वाली लोक साहित्य विषय को मुख्य पाठ्यक्रम में शामिल कर रहा है।

DSC = Discipline Specific Core Course
MD/ID = Multidisciplinary/Interdisciplinary
SEC = Skill Enhancement Course
AEC = Ability Enhancement Course (Communication Skills)
AMSC = Additional Multidisciplinary Skill Course
VAC = Value Added Courses

बी॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
(अनिवार्य प्रश्नपत्र)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई – 1

(क) चंदवरदाई : पृथ्वीराज रासो, संपादक : हजारी प्रसाद द्विवेदी (कैमास करनाटी प्रसंग, पद सं. 1,2,3,4)

(ख) विद्यापति : विद्यापति–पदावली पद
1. जय जय भैरवि असुर भयाउनी
2. नंदक नंदक कदंबक तरु तरे
3. देख–देख राधा रूप अपार
4. माधव, कत तोर करब बड़ाई

इकाई – 2 निम्नांकित कवियों के रचना अंशों का अध्ययन

(क) कबीर : कबीर ग्रंथावली, संपादक : डॉ॰ श्यामसुंदर दास, साखी, पद सं. 1,3,11,12,20

(ख) जायसी : जायसी ग्रंथावली, संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागमति वियोग खंड, पद सं. 1,4,9,12,14

इकाई – 3

(क) तुलसीदास : कवितावली, गीताप्रेस गोरखपुर, बालखंड पद सं. 3,5,17, अयोध्या कांड, पद सं. 11,12

(ख) सूरदास : भ्रमरगीत सार, संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पद सं. 1,7,9,23,57

इकाई – 4

(क) बिहारी : बिहारी रत्नाकर, जगरनाथ जगन्नाथ दास रत्नाकर, पद सं. 1,32,38,42,73

(ख) घनानंद : घनानंद ग्रंथावली, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पद सं. 2,5,7,8,11

संदर्भ ग्रंथ –

1. अमीर खुसरो, संपादक : माधव हाडा।
2. पृथ्वीराज रासो, संपादक : हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3. जायसी ग्रंथावली, संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
4. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी।
5. त्रिवेणी : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
6. गोस्वामी तुलसीदास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
7. कवितावली : गीताप्रेस गोरखपुर।
8. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य : मैनेजर पांडेय।
9. भ्रमरगीत सार : संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
10. बिहारी रत्नाकर, जगरनाथ जगन्नाथ दास रत्नाकर।
11. रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन : राम कुमार वर्मा।
12. रीतिकाल की भूमिका : डॉ॰ नगेंद्र।
13. घनानंद कवित्त : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

1. विद्यार्थियों को प्रमुख कवियों, रचनाओं तथा काव्यधाराओं की जानकारी प्राप्त होगी।
2. विद्यार्थियों की काव्य के भाव, भाषा, शैली और उद्देश्य को समझने की दृष्टि सबल होगी।
3. विद्यार्थी काव्य के तत्वों को आधुनिक संदर्भ में लागू करके साहित्यिक आलोचना में उपयोग कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी काव्य की अंतःसंरचना, प्रतीकों, भाव, अलंकारों और भावनाओं का गहन विश्लेषण कर सकेंगे।
5. विद्यार्थी काव्य दृष्टि, काव्य प्रभाव एवं साहित्यिक योगदान की आलोचनात्मक समीक्षा करने में सबल होंगे।
6. विद्यार्थियों द्वारा नए संदर्भों में रचनात्मक कार्य करने की दृष्टि विकसित होगी।

बी॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर

विषय - गढ़वाली लोक साहित्य-(i)

(Multidisciplinary-I/Interdisciplinary-I)

प्रश्नपत्र - गढ़वाली भाषा : ऐतिहासिक परिचय

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1

- गढ़वाली भाषा का उद्भव।
- गढ़वाली भाषा का विकासक्रम।

इकाई-2

- गढ़वाली बोली के विविध रूप।
- गढ़वाली प्रमुख उपबोलियों का परिचय।

इकाई-3 :

- गढ़वाली शब्द–संपदा।
- गढ़वाली भाषा : वाक्य विन्यास।

इकाई-4 :

- गढ़वाली भाषिक वैशिष्ट्य।
- गढ़वाली भाषिक सौंदर्यबोध।

संदर्भ ग्रंथ

1. गढ़वाल के लोकनृत्य एवं गीत – डॉ॰ शिवानंद नौटियाल
2. गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव – डॉ॰ शिवानंद नौटियाल।
3. गढ़वाली लोक साहित्य की प्रस्तावना – मोहनलाल बाबुलकर।
4. गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन – मोहनलाल बाबुलकर।
5. गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य – डॉ॰ हरिदत्त भट्ट।
6. गढ़वाली लोकगीत विविधा – डॉ॰ गोविंद चातक।
7. राहुल सांकृत्यायन, कृष्णदेव उपाध्याय – हिंदी का लोक साहित्य।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

गढ़वाली भाषा : ऐतिहासिक परिचय

1. विद्यार्थी गढ़वाली भाषा की उत्पत्ति, इतिहास और भौगोलिक क्षेत्र के साथ–साथ प्रमुख बोलियों तथा लिपि संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी गढ़वाली भाषा के ऐतिहासिक विकास की विशेषताओं एवं विभिन्न युगों में गढ़वाली भाषा के स्वरूप को समझ पाएंगे।
3. विद्यार्थी गढ़वाली भाषा के एतिहासिक तथ्यों का प्रयोग साहित्यिक ग्रंथों और बोली प्रयोगों की व्याख्या कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी यह विश्लेषण कर पाएंगे कि गढ़वाली भाषा पर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिंदी का क्या प्रभाव पड़ा।
5. विद्यार्थी गढ़वाली भाषा के इतिहास को एक व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करते हुए, स्थानीय स्रोतों, लोककथाओं और लोक साहित्य के आधार पर भाषा के विकास का नया दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकेंगे।
6. विद्यार्थी गढ़वाली भाषा की ऐतिहासिकता और सांस्कृतिक महत्व का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

बी॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर
भाषा शिक्षण कौशल
(Skill Enhancement Course)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई – 1 भाषा शिक्षण का स्वरूप

- भाषा शिक्षण अभिप्राय, एवं उद्‌देश्य
- भाषा शिक्षण का राष्ट्रीय सामाजिक, एवं शैक्षणिक संदर्भ
- मूक–बधिर भाषा एवं ब्रेल लिपि

इकाई – 2 भाषा शिक्षण की आधारभूत संकल्पनाएँ

- प्रथम भाषा, मातृभाषा तथा अन्य भाषा
- मातृभाषा, द्वितीय भाषा तथा विदेशी भाषा के शिक्षण में अंतर
- सामान्य और विशिष्ट प्रयोजन के लिए भाषा शिक्षण

इकाई – 3 हिंदी शिक्षण

- भाषा कौशल – सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना
- हिंदी का मातृभाषा के रूप में शिक्षण
- द्वितीय तथा विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा का शिक्षण

इकाई – 4 भाषा परीक्षण और मूल्यांकन

- भाषा परीक्षण की संकल्पना एवं विविध प्रकार
- भाषा मूल्यांकन की संकल्पना एवं विविध प्रकार

संदर्भ ग्रंथ –

1. भाषा शिक्षण – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव।
2. हिंदी भाषा शिक्षण – भोलानाथ तिवारी।
3. भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान – ब्रजेश्वर वर्मा।
4. हिंदी शिक्षण : अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य – सतीश कुमार रोहरा।
5. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, भोलानाथ तिवारी।
6. अन्य भाषा शिक्षण के कुछ पक्ष – अमर बहादुर सिंह (संपा0)।
7. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण और वार्तालाप – चतुर्भुज सहाय।
8. हिंदी साहित्य का अध्यापन – मागप्पा।
9. हिंदी शिक्षण और भाषा विश्लेषण – विजय राघव।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

भाषा शिक्षण कौशल

1. विद्यार्थी भाषा शिक्षण की अवधारणा को समझते हुए व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को समझ सकेंगे।
2. भाषा शिक्षण के सामाजिक–सांस्कृतिक, शैक्षिक और राष्ट्रीय संदर्भ को समझ सकेंगे।
3. भाषा शिक्षण के विभिन्न पक्षों और प्रक्रिया संबंधी जानकारी प्राप्त होगी।
4. हिंदी भाषा के मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में शिक्षण की विशेषताओं का परिचय प्राप्त होगा।

बी॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर
आधुनिक गद्य
(अनिवार्य प्रश्नपत्र)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

1. उपन्यास :

चित्रलेखा – भगवतीचरण वर्मा

2. कहानियां :

i. प्रेमचंद – पूस की रात
ii. मोहन राकेश – आर्द्रा
iii. हिमांशु जोशी – तरपन

3. नाटक :

ध्रुवस्वामिनी – जयशंकर प्रसाद

4. हिंदी निबंध :

i. मजदूरी और प्रेम – अध्यापक पूर्ण सिंह
ii. भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है – भारतेंदु
iii. मेरे राम का मुकुट भीग रहा है – विद्यानिवास मिश्र

संदर्भ ग्रंथ –

1. कहानी, नई कहानी – डॉ0 नामवर सिंह
2. हिंदी कहानी : पहचान और परख – डॉ0 इंद्रनाथ मदान
3. कहानी : संवाद का तीसरा आयाम – डॉ0 बटरोही
4. समकालीन हिंदी कविता – गंगा प्रसाद विमल
5. साठोत्तर हिंदी कहानी – डॉ0 के0 एम0 मालती
6. हिंदी नाटक की भूमिका मध्य वर्ग के संदर्भ में – डॉ0 मूलचंद
7. हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग – डॉ0 त्रिभुवन सिंह
8. हिंदी उपन्यास – डॉ0 रामदरश मिश्र
9. उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा – ब्रजनारायण
10. हिंदी उपन्यास – डॉ0 गणेशन
11. समकालीन हिंदी उपन्यास – डॉ0 प्रेमकुमार
12. प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना – डॉ0 गोविंद चातक
13. हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष – डॉ0 रामदरश मिश्र

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes
आधुनिक गद्य

1. विद्यार्थी बुनियादी स्तर में आधुनिक गद्य साहित्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी आधुनिक गद्य की मूल भावना, उसकी शैली और लेखक के उद्देश्य को समझने में सक्षम होंगे।
3. विद्यार्थी आधुनिक गद्य को वास्तविक जीवन के संदर्भ में लागू करने का प्रयास करेंगे।
4. विद्यार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक दृष्टि से गद्य की संरचना, शैली और सामग्री का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।
5. विद्यार्थी गद्य रचनाओं का मूल्यांकन साहित्यिक दृष्टिकोण से कर सकेंगे।
6. विद्यार्थियों को विभिन्न विचारों को एकत्र करके नया दृष्टिकोण या विचार प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित होगी।

बी॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर

विषय - गढ़वाली लोक साहित्य-(ii)

(Multidisciplinary-II/Interdisciplinary-II)

प्रश्नपत्र - गढ़वाली साहित्य का स्वरूप

पूर्णांक – 100 (70+30)

क्रेडिट – 04

इकाई-1

- गढ़वाल : परिचय (भौगोलिक)
- गढ़वाल : साहित्यिक परिचय (ऐतिहासिक पृष्ठभूमि)

इकाई-2 :

- गढ़वाली लोकगीत
- गढ़वाली लोकगाथाएं

इकाई-3 :

- लोक कथाएं
- लोक विश्वास

इकाई-4 :

- लोकोक्तियां
- लोक संस्कार

संदर्भ ग्रंथ

1. गढ़वाल का इतिहास – हरिकृष्ण रतूड़ी।
2. गढ़वाली साहित्य का उद्भव और विकास – डॉ॰ गोविंद चातक।
3. गढ़वाली लोक मानस – डॉ॰ शिवानंद नौटियाल।
4. भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भ : मध्य हिमालय – गोविंद चातक।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

गढ़वाली साहित्य का स्वरूप

1. विद्यार्थी गढ़वाली साहित्य की प्रमुख धाराओं, विधाओं और लेखकों को याद करते हुए मौखिक, लौकिक एवं लिखित साहित्य के बीच का अंतर जान सकेंगे।
2. विद्यार्थी गढ़वाली साहित्य के ऐतिहासिक विकास, विषय वस्तु एवं शैलीगत विशेषताओं को समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी गढ़वाली साहित्य की विशेषताओं को साहित्यिक कृतियों की व्याख्या में लागू कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी गढ़वाली साहित्य की विभिन्न विधाओं का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
5. विद्यार्थी गढ़वाली साहित्य के स्वरूप पर आधारित समग्र दृष्टिकोण के अंतर्गत मौखिक परंपरा एवं आधुनिक लेखन को जोड़कर नया परिप्रेक्ष्य निर्मित कर पाएंगे।
6. विद्यार्थी गढ़वाली साहित्य के स्वरूप की प्रासंगिकता और महत्व का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

बी॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर
प्रयोजनमूलक हिंदी
(Skill Enhancement Course)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 02

इकाई-1 :

- भाषा और उसके विविध रूप।
- प्रयोजनमूलक हिंदी की संकल्पना और उसके विविध आयाम।

इकाई-2 :

- श्रव्य एवं दृश्य माध्यम : परिचय।
- संचार माध्यमों की प्रकृति एवं चरित्र।
- रेडियो लेखन उद्घोषणा, कार्यक्रम–संयोजन, समाचार, धारावाहिक, फीचर, रिपोर्ट, रेडियो, नाटक।

इकाई-3 :

- पत्रकारिता का स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार।
- हिंदी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास।
- व्यावहारिक प्रूफ–शोधन एवं प्रेस–प्रबंधन।

इकाई-4 :

- कार्यालयी हिंदी का स्वरूप।
- कार्यालयी पत्र–लेखन।

संदर्भ ग्रंथ

1. ओमप्रकाश सिंहल : प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी।
2. बालगोविंद मिश्र : व्यावहारिक हिंदी संरचना और अभ्यास।
3. माधव सोनटक्के : प्रयोजनमूलक हिंदी।
4. डॉ॰ रामप्रकाश : प्रयोजनमूलक हिंदी।
5. सुशीला जोशी : हिंदी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम।
6. कृष्णकुमार गोस्वामी : प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

प्रयोजनमूलक हिंदी

1. विद्यार्थी शुद्ध, सरल और प्रभावी हिंदी लिखने–बोलने की क्षमता विकसित करेंगे, जो प्रशासनिक पत्रकारिता और मीडिया क्षेत्रों में उपयोगी होगी।
2. विद्यार्थियों में औपचारिक पत्र, ई–मेल, रिपोर्ट, समाचार लेखन, विज्ञापन एवं अनुवाद जैसे व्यावहारिक लेखन कौशल का विकास होगा।
3. डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और कार्यालयी कार्यों में हिदी भाषा के प्रयोग की योग्यता विकसित होगी।
4. विद्यार्थी हिंदी के माध्यम से सामाजिक सरोकारों, जनसंपर्क और व्यावसायिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावहारिक दृष्टि अपनाएंगे।
5. विद्यार्थी पत्रकारिता, अनुवाद, विज्ञापन, प्रशासनिक सेवाओं तथा कॉर्पोरेट सेक्टर में हिंदी के प्रयोग से जुड़ी रोजगार की संभावनाओं के लिए तैयार होंगे।

बी॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर
संचार कौशल
(Communication Skills)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 02

इकाई – 01 संचार कौशल

i. परिचय, अर्थ एवं महत्व
ii. संचार की प्रक्रिया एवं प्रकार
iii. संचार की बाधाएं

इकाई – 02 संचार कौशल के मूलभूत गुण

i. बोलने और सुनने का महत्व
ii. सार्वजनिक भाषण और अनुनय की कला
iii. प्रभावी लेखन

इकाई – 03 भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशल

i. भावनात्मक बुद्धिमत्ता को समझना, आत्म–जागरूकता
ii. आवेग नियंत्रण, तनाव प्रबंधन
iii. सहानुभूति और प्रभावी संचार

इकाई – 04 साक्षात्कार कौशल

i. साक्षात्कार की प्रक्रिया
ii. साक्षात्कार के दौरान प्रभावी मौखिक और गैर–मौखिक संचार।

संदर्भ ग्रंथ –

1. हिंदी भाषा शिक्षण – भोलानाथ तिवारी।
2. प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी – कृष्णकुमार गोस्वामी।
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – नरेश मिश्र।
4. भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान – ब्रजेश्वर वर्मा।
5. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण और वार्तालाप – चतुर्भुज सहाय।
6. हिंदी शिक्षण और भाषा विश्लेषण – विजय राघव।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

संचार कौशल (Communication Skills)

1. विद्यार्थी संचार के विभिन्न रूपों (बोलना, लिखना, सुनना आदि) का प्रक्रियात्मक एवं प्रयोगात्मक ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. संचार कौशल के प्रभावी मूलभूत कौशल का विकास होगा।
3. विद्यार्थी संचार के कौशल का व्यावसायिक उपयोग कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी भावनात्मक, आत्मजागरूक, आवेग नियंत्रण, तनाव प्रबंधन आदि को अपने व्यक्तित्व में उतार सकेंगे।
5. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक तथा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों के लिए रोजगारोन्मुख करेगा।

29/8/2025

प्रो. गुड्डी बिष्ट पंवार,

संयोजक एवं विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय,

श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

प्रो0 गुड्डी बिष्ट
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय वि0 वि0 श्रीनगर (ग0)